Volume: 1 Issue: 4 Pages: 53-57
International Journal of Research in Academic World
E-ISSN: 2583-1615
Impact Factor: 3.133
Received: 13/November/2021 Int. J Res. Acad. World. 2021; 1(4):53-57 Accepted: 17/December/2021

सर्जनात्मक समस्या समाधान योग्यता: अवधारणा एवं संवर्धन हेतु सुझाव

*[1]डॉ. सलमा नसीम

*[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर (बी. एड.) श्री नारायण गलर्स पीजी कालेज, उन्नाव, उत्तर प्रदेश भारत।

सारांश

वर्तमान समय में विद्यार्थियों में सर्जनात्मक समस्या समाधान करने की योग्यता विकसित करने की आवश्यकता है। सर्जनात्मक समस्या समाधान विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान कर व्यक्ति में मौलिक समाधान योग्यता विकसित करती है। किन्तु, तत्कालिक शिक्षा की संरचना में उन विद्यार्थियों को अधिक सराहना एवं प्रोत्साहन दिया जाता है, जो तथ्यों को केवल याद रखते है और सही उत्तर देते हैं। यह विद्यार्थियों की सर्जनात्मक समस्या समाधान की योग्यता में बाधा उपस्थित करती है। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षकों एवं शिक्षाविदों द्वारा विद्यार्थियों में सर्जनात्मक समस्या समाधान की योग्यता विकसित की जाए, जिससे विद्यार्थी उचित निर्णय लेने, विचारों को सम्प्रेषित करने एवं समूह के साथ कार्य करने के योग्य बन सकें। सभी विद्यार्थियों में सर्जनात्मक समस्या समाधान की योग्यता विद्यमान होती है और विद्यार्थियों में उपयुक्त वातावरण एवं प्रशिक्षण द्वारा इसे विकसित किया जा सकता है जिससे वे भावी जीवन की जटिल समस्याओं एवं चुनौतियों का सफलतापूर्वक एवं रचनात्मक हल करने के योग्य बन सकें।

मुख्य शब्द: सर्जनात्मक, समस्या समाधान, योग्यता, मौलिक, प्रशिक्षण, रचनात्मक हल

प्रस्तावना

जीवन में सफलता छोटी, बड़ी अनेक समस्याओं को हल करने की योग्यता पर निर्भर करती है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो उसके संतुलन को भंग करती है तथा उसके समायोजन को चुनौती प्रस्तुत करती हैं, किन्तु यही समस्यायें उसके लिये विकास के नये द्वार भी खोलती है। जो व्यक्ति समस्या समाधान में जितना अधिक निपुण होता है, जीवन में उसे उतनी अधिक सफलता प्राप्त होती है। प्रभावी समस्या समाधान में व्यक्ति की अग्रगामी सोच, गहन चिन्तन तथा मौलिक समाधान प्रस्तुत करने की योग्यता एवं साहस अत्यन्त आवश्यक होती है। यह योग्यतायें व्यक्ति की कार्यक्षमता में वृद्धि एवं निष्पादन स्तर में सुधार लाती हैं तथा उसे व्यावसायिक विकास के अवसर प्रदान करती है। सामान्यतः समस्या को नकारात्मक अर्थ में लिया जाता है। प्रायः लोग ऐसा मानते है कि समस्या केवल बाह्य तत्वों या दुःखद घटनाओं द्वारा ही उत्पन्न होती है, जबकि ऐसा नही है। कोई भी नई जागरुकता जिसके द्वारा व्यक्ति अपने कार्य में सुधार की सम्भावना देखता है समस्या को जन्म देती है। अपेक्षा से कम लक्ष्य की प्राप्ति भी समस्या उत्पन्न करती है। समस्याओं का समाधान व्यक्ति के निष्पादन में सुधार लाता है और उसके जीवन को सफल एवं सुखमय बनाता है।

वर्तमान समय में वे व्यक्ति अधिक सफल एवं प्रगतिशील है जो सर्जनात्मक समस्या समाधानकर्ता हैं क्योंकि परम्परागत ढंग से किया गया समाधान व्यक्ति को विकास की ओर नही ले जा पाता। वर्तमान समय के सतत् प्रतिस्पर्धात्मक युग में मनुष्य के समक्ष अनेक समस्याएं उपस्थित हो गई हैं। इन समस्याओं के समाधान में नवीन एवं मौलिक चिन्तन और त्वरित निर्णय अत्यन्त आवश्यक है जिससे समस्या का समाधान मौलिक रीति से किया जा सके क्योंकि परम्परागत तरीके से इन नवीन विषम समस्याओं का समाधान सम्भव नही है। व्यक्ति की सफलता एवं प्रगति उसकी रचनात्मकता एवं मौलिकता में ही निहित है। इसी कारण अब समस्या के सर्जनात्मक समाधान पर विशेष बल दिया जाता हैं। सर्जनात्मक समस्या समाधान की योग्यता व्यक्ति की अभिवृत्ति में परिवर्तन लाती है, समस्या के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करती है और उसे समस्या अन्वेषक बनाती है। यह व्यक्ति को एक ऐसा आधार प्रदान करती है जिसके द्वारा व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से मौलिक समाधान विस्तृत कार्य योजना के साथ उत्पन्न किया जा सकें। जिससे उन्हें सफलतापूर्वक क्रियान्वित किया जा सकें। सर्जनात्मक समस्या समाधान विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान कर व्यक्ति में मौलिक समाधान योग्यता विकसित करती है। अतः वर्तमान समय में विद्यार्थियों में सर्जनात्मक समस्या समाधान करने की योग्यता विकसित करने की आवश्यकता है। किन्तु, तत्कालिक शिक्षा की संरचना में उन विद्यार्थियों को अधिक सराहना एवं प्रोत्साहन दिया जाता है, जो तथ्यों को केवल याद रखते है और सही उत्तर देते हैं। यह विद्यार्थियों की सर्जनात्मक समस्या समाधान की योग्यता में बाधा उपस्थित करती है। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षकों एवं शिक्षाविदों द्वारा विद्यार्थियों में सर्जनात्मक समस्या समाधान की योग्यता विकसित की जाए, जिससे विद्यार्थी उचित निर्णय लेने, विचारों को सम्प्रेषित करने एवं समूह के साथ कार्य करने के योग्य बन सकें। सभी विद्यार्थियों में सर्जनात्मक समस्या समाधान की योग्यता विद्यमान होती है और विद्यार्थियों में उपयुक्त वातावरण एवं प्रशिक्षण द्वारा इसे विकसित किया जा सकता है जिससे वे भावी जीवन की जटिल समस्याओं एवं चुनौतियों का सफलतापूर्वक एवं रचनात्मक हल करने के योग्य बन सकें।

सर्जनात्मक समस्या समाधान

सर्जनात्मक समस्या समाधान एक संरचित प्रक्रिया है जिसके द्वारा समस्या के नवीन मौलिक समाधान की खोज एवं मूल्यांकन किया जाता है। इसका उपयोग रूढ़िवादी चिन्तन से दूर जाने तथा सर्जनात्मक एवं उपयोगी समाधान को प्राप्त करने के लिये किया

*Corresponding Author: डॉ. सलमा नसीम

जाता है। यह वास्तविक जीवन की समस्याओं के समाधान में रचनात्मक उपागम को प्रेरित करने का साधन है।

सर्जनात्मक समस्या समाधान का अर्थ एवं परिभाषाएं

Noller (1979) के अनुसार, 'सर्जनात्मक समस्या समाधान तीन शब्दों से मिलकर बना हैं। सर्जनात्मक, समस्या और समाधान, जिसमें सर्जनात्मक का अर्थ है ऐसा समाधान जो नवीन एवं सार्थक हो। समस्या से अभिप्राय है ऐसी परिस्थिति जो व्यक्ति के समक्ष चुनौती प्रस्तुत करे और समाधान वे उत्तर है जो समस्या को संतुष्ट करे। अतः सर्जनात्मक समस्या समाधान किसी समस्या पर एक कल्पनाशील तरीके से प्रवेश करने की एक विधि, प्रणाली एवं प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरुप प्रभावी क्रिया सम्पन्न होती है।'

Web Encyclopedia के अनुसार, 'सर्जनात्मक समस्या समाधान, किसी समस्या का समाधान प्रस्तुत करने की मानसिक प्रक्रिया है। वस्तुतः, यह समस्या समाधान का ही विशिष्ट रूप हैं जिसमें स्वतन्त्र रूप से समाधान उत्पन्न किये जाते हैं।'

Renn (2003) के अनुसार, 'सर्जनात्मक समस्या समाधान एक प्रक्रिया है जो नैर्सिर्गक समस्या समाधान की प्रक्रिया को जन्म देने तथा चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में एक व्यवस्थित रूप से नवीन समाधान उत्पन्न करने का मूल आधार है।

Draze (2005) के अनुसार, 'सर्जनात्मक समस्या समाधान प्रतिदिन की समस्याओं के समाधान को प्राप्त करने में सर्जनात्मक एवं आलोचनात्मक दोनों ही चिन्तन को अपनाने की एक प्रक्रिया है। यह सर्जनात्मक व्यवहार को बढ़ाने का एक तरीका हैऔर साथ ही समस्या समाधान के क्रम में सूचना एवं विचारों को संगठित करने का एक व्यवस्थित तरीका भी है।

Isaksen (1995) के अनुसार, "Creative problem solving is a broadly applicable process providing an organizing framework for specific creative and critical thinking techniques to help design and develop new and useful outcomes for meaningful and important challenges, concerns and opportunities."

उपर्युक्त परिभाषा के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि सर्जनात्मक समस्या समाधान एक व्यापक, उपयोगी प्रक्रिया है जो विशिष्ट सर्जनात्मक एवं आलोचनात्मक चिन्तन के लिये व्यवस्थित रूपरेखा प्रदान करती है। यह महत्वपूर्ण चुनौतियों, विषयों एवं अवसरों के लिये उपयोगी परिणामों के डिजाइन एवं विकास में सहायक है।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सर्जनात्मक समस्या समाधान एक मानसिक प्रक्रिया है। यह चुनौतीपूर्ण एवं समस्यात्मक परिस्थिति में विशिष्ट समस्या ज्ञात करने एवं उसका व्यवस्थित रूप से मौलिक समाधान प्राप्त करने में सहायक है। इस प्रक्रिया में रचनात्मक एवं आलोचनात्मक, अपसारी एवं अभिसारी चिन्तन का प्रयोग किया जाता है। सर्जनात्मक समस्या समाधान प्रक्रिया में केवल सर्जनात्मक समाधान ही ज्ञात नही किये जाते वरन् उस समाधान को क्रियान्वित करने हेतु उपयुक्त कार्य योजना का निर्माण करने के साथ ही उसे क्रियान्वित भी किया जाता है। सर्जनात्मक समस्या समाधान व्यक्ति के रचनात्मक व्यवहार में अभिवृद्धि, आत्मविश्वास की भावना एवं समस्या समाधान करने की योग्यता विकसित करने में सहायक है। अतः सरल रूप में यह कहा जा सकता है कि सर्जनात्मक समस्या समाधान की प्रक्रिया व्यक्ति को लक्ष्य या समस्या से सर्जनात्मक समाधान की ओर ले जाने में सहायक है।

सर्जनात्मक समस्या समाधान की विशेषतायें

सर्जनात्मक समस्या समाधान की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

- सर्जनात्मक समस्या समाधान एक मानसिक प्रक्रिया है। जिसमें विभिन्न मानसिक क्रियायें क्रम से सम्मिलित है जैसेः-सूचना का संकलन, समस्या को परिभाषित करना, विचारों को उत्पन्न करना, समाधान का विकास करना एवं क्रिया हेतु योजना बनाना।
- सर्जनात्मक समस्या समाधान में सदैव सर्जनात्मकता सम्मिलित होती है किन्तु सर्जनात्मकता में प्रायः समस्या समाधान सम्मिलित नही होता है विशेषकर संगीत, कला इत्यादि के क्षेत्र में।
- सर्जनात्मक समस्या समाधान में अपसारी एवं अभिसारी चिन्तन कौशल का प्रयोग किया जाता है।
- यह प्रक्रिया व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों रूपों में प्रयुक्त की जा सकती है।
- सर्जनात्मक समस्या समाधान व्यक्ति को अनेक विचारों को उत्पन्न करने में सहायक उपकरण उपलब्ध कराता है।
- सर्जनात्मक समस्या समाधान व्यापक एवं व्यवस्थित प्रक्रिया है जो समस्या कथन से क्रियान्वयन हेतु नियोजन तक जाती है।
- विशेष प्रशिक्षण द्वारा व्यक्तियों में सर्जनात्मक समस्या समाधान योग्यता विकसित की जा सकती है।

सर्जनात्मक समस्या समाधान प्रक्रिया के सोपान

Isaksen और Treffinger (2004) ने सर्जनात्मक समस्या समाधान प्रक्रिया के निम्नलिखित छः चरण दियें है -

अव्यवस्था खोज (Mess Finding): यह सर्जनात्मक समस्या समाधान प्रक्रिया का प्रथम सोपान है। इस सोपान में उन चुनौतियों या लक्ष्य की खोज की जाती है जिसमें सुधार की आवश्यकता है और वे लक्ष्य ज्ञात किये जाते हैं जिस पर व्यक्ति कार्य करना चाहता है। अव्यवस्था समस्या का व्यापक एवं विस्तृत कथन है। यह समस्या के आधार क्षेत्र की व्याख्या करता है जिस पर समस्या समाधानकर्ता के प्रयास केन्द्रित होते हैं।

इस सोपान में अपसारी चिन्तन द्वारा समस्याओं एवं चुनौतियों को ज्ञात किया जाता है तथा अभिसारी चिन्तन द्वारा एक विस्तृत सामान्य लक्ष्य प्राप्त कर लिया जाता हैं।

प्रदत्त प्राप्त करना (Data Finding): इस सोपान के अन्तर्गत विस्तृत समस्या को अधिक स्पष्ट करने हेतु उससे सम्बन्धित ज्ञान, सूचनाओं एवं विचारों को ज्ञात तथा संकलित किया जाता है। समस्यात्मक स्थिति को भली-भांति समझने के लिये उसमें निहित सभी प्रश्नों, तथ्यों एवं भावनाओं से सम्बन्धित सूचनाओं की प्राप्ति इस सोपान में की जाती है। यह सोपान समस्या समाधानकर्ता को समस्यात्मक परिस्थिति के सबसे महत्वपूर्ण पक्ष पर ध्यान केन्द्रित करने में सहायक होता है। इस सोपान में अपसारी चिन्तन में कौन, कहां, क्या, कब, क्यों, कैसे इत्यादि प्रश्नों का प्रयोग किया जाता है। साथ ही समस्यात्मक परिस्थिति को विभिन्न विचार बिन्दुओं से देखने एवं मूल्यांकन करने के लिये भी अपसारी चिन्तन किया जाता है।अभिसारी चिन्तन द्वारा समस्या के दिशा निर्देश हेतु अत्याधिक महत्वपूर्ण प्रदत्त को चिन्हित किया जाता है और प्रदत्त के आधार पर समस्यात्मक स्थिति का पुनः कथन किया जाता है।

प्रदत्त प्राप्ति सोपान में समस्यात्मक स्थिति को भली भांति समझने के लिये समस्या के विषय में आप क्या जानते है? इससे सम्बन्धित समस्त सूचनाओं एवं प्रदत्तों का संकलन किया जाता है।

समस्या कथन (Problem Finding): समस्या कथन सोपान में एक विशिष्ट समस्या की पहचान की जाती है जिस पर समस्या समाधानकर्ता के सभी प्रयास केन्द्रित होते हैं। प्रभावी एवं उपयुक्त समस्या कथन अनेक मौलिक विचारों को उत्पन्न करने में सहायक होता है। उपयुक्त समस्या कथन से आधी समस्या का समाधान हो जाता है। Einstein ने कहा था कि 'यदि मुझे किसी समस्या के समाधान हेतु एक घंटे का समय दिया जाए तो मैं 50 मिनट समस्या को परिभाषित करने में एवं 10 मिनट समस्या के समाधान में व्यतीत करूंगा।

सर्जनात्मक समस्या समाधान का सिद्धान्त है कि समस्या का परिभाषीकरण समाधान की प्रकृति को निश्चित करता है। इस सोपान में समस्या को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया जाता है। समस्या कथन सोपान सर्जनात्मक समस्या समाधान प्रक्रिया का हृदय है। इस पर ही अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होती है। समस्या का कथन इस प्रकार किया जाना चाहिये कि नवीन विचारों को उत्पन्न किया जा सके। समस्या पहले से ही ज्ञात है इस विचार बिन्दु से समस्या को परिभाषित नही किया जाना चाहिये।

अपसारी चिन्तन द्वारा इस सोपान पर अनेक सम्भावित समस्या कथन पर विचार प्राप्त करके उन्हें सूचीबद्ध किया जाता है तथा अभिसारी चिन्तन द्वारा प्रत्येक समस्या कथन की समीक्षा की जाती है और एक विशिष्ट एवं अधिक उपयुक्त समस्या कथन किया जाता है जिससे वास्तविक समस्या की उत्तम रूप से व्याख्या की जा सके तथा जिसका समाधान व्यक्ति के लिये लाभदायक हो सके।

विचार प्राप्ति (Idea Finding): विचार प्राप्ति सोपान में स्पष्ट रूप से परिभाषित समस्या के समाधान के लिये अनेक सम्भावित समाधानों या fopkjkas को उत्पन्न किया जाता है। इस सोपान में ब्रेनस्टार्मिंग तकनीक का प्रयोग किया जाता है। विचार स्वतन्त्र रूप से, बिना आलोचना एवं मूल्यांकन के, प्रस्तुत किये जाते है। इस सोपान में सर्जनात्मकता के धाराप्रवाहिता, लचीलापन, विस्तारण एवं मौलिकता घटकों को सम्मिलित किया गया है। अपसारी चिन्तन कौशल द्वारा इस सोपान में समस्या के अनेक सम्भावित, विस्तृत, मौलिक एवं परिष्कृत विचारों को उत्पन्न किया जाता है और अभिसारी चिन्तन द्वारा प्रत्येक विचार की समीक्षा एवं मूल्यांकन किया जाता है तथा मौलिक एवं उपयुक्त विचारों का चयन कर लिया जाता है।

समाधान की खोज (Solution Finding): समाधान की खोज सोपान में समस्या से सम्बन्धित समाधानों या विचारों का व्यवस्थित रूप से मूल्यांकन किया जाता है। योग्य विचारों का विश्लेषण, परिष्कार एवं विकास किया जाता है। सम्भावित समाधानों या विचारों को प्राथमिकता के आधार पर श्रेणीबद्ध किया जाता है तथा एक मानदंड का निर्धारण किया जाता है। इस मानदंड में लागत, समय, जोखिम, सामग्री, विश्वसनीयता, गुणवत्ता इत्यादि को सम्मिलित किया जा सकता है जिसका प्रयोग उत्तम समाधान या विचार का चयन करने में किया जाता है। इस सोपान में अपसारी चिन्तन द्वारा विचारों के मूल्यांकन के लिये मानदंड की सूची तैयार की जाती है और अभिसारी चिन्तन द्वारा सूचीबद्ध मानदंडों की समीक्षा की जाती है, जो विचारों के मूल्यांकन के लिये उपयुक्त होते हैं। जो विचार इस मानदंड पर सही होता है उसे चयनित कर लिया जाता है। यहां एक से अधिक विचारों का चयन किया जाता है तथा इन विचारों का पुनः मूल्यांकन किया जाता है। यह सोपान व्यक्ति को सम्भावित समाधान की कमियों एवं शक्तियों की पहचान एवं मूल्यांकन के योग्य बनाता है। इस आधार पर उत्तम समाधान का चयन किया जाता है।

स्वीकृति प्राप्त करना (Acceptance Finding): उत्तम समाधान प्राप्त करने के पश्चात् इस सोपान में उस समाधान को क्रियान्वित करने एवं उस पर अधिकतम लोगों की स्वीकृति प्राप्त करने के लिये एक कार्य योजना का निर्माण किया जाता है। इस सोपान का मुख्य उद्देश्य समाधान पर स्वीकृति प्राप्त करने के विकल्पों को तथा समाधान को क्रियान्वित करने में बाधाओं, अपेक्षित स्रोतों एवं सहायक तत्वों को ज्ञात किया जाता है। अपसारी चिन्तन कौशल द्वारा समाधान में सहायक और बाधक तत्वों एवं समाधान को क्रियान्वित करने के लिये सम्भावित कार्य योजना पर विचार किया जाता है और एक विशिष्ट कार्य योजना निर्मित की जाती है जिस पर सभी लोगों की स्वीकृति प्राप्त होती है।

सर्जनात्मक समस्या समाधान प्रक्रिया के उपरोक्त सोपान समस्या के सर्जनात्मक समाधान के लिये दिशा निर्देश है जिनका क्रमवार अनुसरण एक से अधिक सर्जनात्मक एवं कार्यपरक समाधान को उत्पन्न करने में किया जाता है। इस प्रक्रिया की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि प्रत्येक सोपान में पहले अपसारी चिन्तन की अवस्था है जिसमें एक से अधिक विचारों को उत्पन्न किया जाता है तथा उसके पश्चात् अभिसारी चिन्तन की अवस्था है जिसमे केवल एक सर्वाधिक सम्भावित विचार का चयन किया जाता है। इस प्रकार यह सोपान व्यक्ति की चिन्तन योग्यता को विकसित करने में नितान्त सहायक है।

सर्जनात्मक समस्या समाधान के घटक

Isaksen एवं Treffinger (2004) ने सर्जनात्मक समस्या समाधान प्रक्रिया के छः सोपानों को तीन घटकों में वर्गीकृत किया है, जिन्हें नीचे प्रस्तुत किया गया है:-

समस्या का अवबोध: समस्या का अवबोध सर्जनात्मक समस्या समाधान प्रक्रिया का प्रथम घटक है जिसके अन्तर्गत सर्जनात्मक समस्या समाधान प्रक्रिया के तीन सोपानों अव्यवस्था खोज, प्रदत्त प्राप्ति एवं समस्या कथन को सम्मिलित किया गया है। इस घटक में एक विस्तृत लक्ष्य की पहचान की जाती है जिससे चिन्तन को सिर्फ उसी दिशा में केन्द्रित किया जा सके। इस घटक का प्रयोग समस्या की खोज और लक्ष्य या उद्देश्य निर्धारण अथवा एक दिशा में चिन्तन को केन्द्रित करने की आवश्यकता होने पर किया जाता है। सर्जनात्मक समस्या समाधान का यह घटक व्यक्ति को इस योग्य बनाता है कि वह अव्यवस्था या समस्यात्मक परिस्थिति की पहचान कर सके, उसे स्पष्ट करने हेतु सभी सम्भावित तथ्यों की खोज कर सके तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्या को स्पष्ट रूप से परिभाषित कर सके।

विचार उत्प्रेरण: विचार उत्प्रेरण घटक के अन्तर्गत समस्या समाधान से सम्बन्धित अनेक नवीन सम्भावनाओं पर विचार किया जाता है। विचारों के सर्जन हेतु ब्रेनस्टार्मिंग विधि का प्रयोग किया जाता है। इस घटक का प्रयोग एक स्पष्ट समस्या के अनेक भिन्न, नवीन एवं मौलिक विचारों को उत्पन्न करने हेतु किया जाता है। विचार उत्प्रेरण घटक में व्यक्ति सर्जनात्मक समस्या समाधान प्रक्रिया के विचार प्राप्ति सोपान को सम्मिलित किया गया है। विचार उत्प्रेरण घटक व्यक्ति की चिन्तन क्षमता को विस्तृत करने एवं परम्परागत एवं रूढ़िवादिता के स्थान पर स्वतन्त्र रूप से मौलिक एवं नवीन विचारों को उत्पन्न करने हेतु प्रेरित करता है।

क्रियान्वयन हेतु नियोजन: सर्जनात्मक समस्या समाधान का तीसरा घटक क्रियान्वयन हेतु नियोजन है। यह घटक समाधान के आशाजनक या सम्भावित विकल्पों को व्यावहारिक समाधान में परिवर्तित करने, और उसको सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने में सहायक है। यह घटक समस्या के सर्जनात्मक समाधान का चयन करने और उस समाधान को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने में सहायक है। इस घटक के अन्तर्गत सर्जनात्मक समस्या समाधान प्रक्रिया के अन्तिम दो सोपान, समाधान का चयन एवं स्वीकृति प्राप्त करने को सम्मिलित किया गया है। इस घटक का प्रयोग नवीन सम्भावनाओं को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने की आवश्यकता होने पर किया जाता है। यह घटक व्यक्ति को इस योग्य बनाता है कि वह नवीन, मौलिक एवं व्यावहारिक समाधान का चयन कर सके तथा उस समाधान को क्रियान्वित करने में आने वाली बाधाओं को दूर कर सके। यह व्यक्ति में जोखिम लेने की प्रवृत्ति को विकसित करता है। साथ ही इससे व्यक्ति मौलिक समाधान पर लोगों की स्वीकृति प्राप्त करने में सक्षम होता है।

सर्जनात्मक समस्या समाधान को प्रभावित करने वाले कारक

विभिन्न शोध अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि कई ऐसे कारक है जिनका सर्जनात्मक समस्या समाधान पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। सर्जनात्मक समस्या समाधान को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित है:-

दुश्चिंता: कुछ ऐसी समस्यायें होती है जो व्यक्ति में अधिक चिंता उत्पन्न कर देती है। जब व्यक्ति में अधिक चिंता हो जाती है तब सर्जनात्मक समस्या समाधान पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और व्यक्ति सर्जनात्मक समस्या समाधान ठीक ढंग से नही कर पाता। व्यक्ति में साधारण स्तर की चिंता तो आवश्यक है क्योंकि इससे उसे प्रबल प्रेरणा प्राप्त होती है किंतु, इसकी अधिकता सर्जनात्मक विचारों में बाधक है।

समस्या का स्वरूप: समस्यायें दो प्रकार की होती है स्पष्ट समस्यायें और अस्पष्ट समस्यायें। समस्या के इस स्वरूप का भी प्रभाव सर्जनात्मक समस्या समाधान पर पड़ता है। स्पष्ट समस्या का सर्जनात्मक समाधान आसान होता है लेकिन अस्पष्ट समस्या का सर्जनात्मक समाधान, स्पष्ट समस्या की अपेक्षा कठिन होता है, किंतु इसका अर्थ यह नही है कि इसका सर्जनात्मक समाधान नही किया जा सकता। विशेष प्रयासों एवं उपायों द्वारा ऐसी समस्याओं का सर्जनात्मक समाधान खोजा जा सकता है। अस्पष्ट समस्याएं सर्जनात्मक समस्या समाधान के लिए उपयुक्त होती हैं।

मानसिक वृत्ति: मानसिक वृत्ति का भी प्रभाव सर्जनात्मक समस्या समाधान पर पड़ता है। मानसिक वृत्ति व्यक्ति की समस्या समाधान करने की विशेषता से सम्बन्धित होती है। जब व्यक्ति किसी समस्या का समाधान करता है तो उसमें एक खास तरह की मानसिक वृत्ति उत्पन्न हो जाती है जो समस्या समाधानकर्ता को दूसरी समस्या के समाधान में भी वही तरीका अपनाने की प्रेरणा देती है। इस प्रकार की मानसिक वृत्ति सर्जनात्मक समस्या समाधान में बाधा पहुंचाती है।

नवीनता एवं जटिलता में अभिरूचि: सर्जनात्मक समस्या समाधान को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक अभिरूचि भी है। जो व्यक्ति नवीन तथा जटिल समस्या के समाधान में अभिरूचि दिखाते है वे परम्परागत समाधान की अपेक्षा सर्जनात्मक विचारों की खोज करते हैं। वे हमेशा यह कोशिश करते हैं कि सर्जनात्मक तरीके से समस्या का समाधान करें।

ब्रेनस्टार्मिंग: सर्जनात्मक समस्या समाधान पर ब्रेनस्टार्मिंग का प्रभाव पड़ता है। ब्रेनस्टार्मिंग से अभिप्राय एक ऐसी प्रक्रिया से होता जिसमें व्यक्ति को अनेक सम्भावित समाधानों के विषय में बताना होता है। इस प्रकार के ब्रेनस्टार्मिंग का लाभ यह होता है कि व्यक्ति द्वारा बताये गये विभिन्न समाधानों से नवीन, मौलिक एवं उत्तम समाधान निकल आते है और समस्या का सर्जनात्मक समाधान प्राप्त हो जाता है।

प्रशिक्षण: प्रशिक्षण का भी प्रभाव सर्जनात्मक समस्या समाधान पर पड़ता है। सर्जनात्मक समस्या समाधान की उपयुक्त प्रविधियों एवं प्रक्रिया का प्रशिक्षण देकर व्यक्ति में सर्जनात्मक समस्या समाधान योग्यता विकसित की जा सकती है।

सर्जनात्मक समस्या समाधान योग्यता विकसित करने हेतु सुझाव

सर्जनात्मक समस्या समाधान योग्यता व्यक्ति में विकसित की जा सकती है। इसके लिये विद्वानों ने अनेक सुझाव दिये हैं। इन सुझावों के द्वारा विद्यार्थियों अथवा व्यक्तियों में सर्जनात्मक समस्या समाधान योग्यता विकसित की जा सकती है। सर्जनात्मक समस्या समाधान योग्यता को विकसित करने हेतु प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैः-

सर्जनशीलता के लिये आन्तरिक अवरोधों को हटाना: विद्यार्थियों के सर्जनात्मक विचारों को प्रेरित करने के लिए उन्हें स्वतन्त्र रुप से चिन्तन करने का अवसर प्रदान किया जाना चाहियें। शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों पर स्वयं के विचारों को नही थोपा जाना चाहियें तथा विद्यार्थियों के नवीन विचारों का सम्मान किया जाना चाहियें जिससे विद्यार्थी स्वतन्त्र रुप से अपने विचारों को व्यक्त कर सकें।

विद्यार्थियों के चिन्तन में आने वाली समस्याओं का समाधान: शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों के चिन्तन में आने वाली समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुनकर हल कया जाना चाहियें और उनसे प्राप्त विचारों को वर्गीकृत एवं संगठित किया जाना चाहियें।

विलम्बित निर्णय: विलम्बित निर्णय का अभिप्राय है किसी समस्या पर तत्काल निर्णय न लेकर समस्त सम्भावित विकल्पों पर चिन्तन करना। ऐसा करने से विद्यार्थी किसी समस्या के विषय में गहनता से चिन्तन करने के लिये अनेक प्रकार के प्रत्यक्षीकरण पर अधिक समय व्यय कर सकेगा और इससे वैकल्पिक हलों के लिये वृद्धि की सम्भावना बढ़ जाती है।

अभ्यास द्वारा समस्या समाधान के अनुभव प्रदान करना: शिक्षकों द्वारा समस्या समाधान, प्रोजेक्ट विधि एवं ब्रेनस्टार्मिंग विधियों का प्रयोग कक्षा शिक्षण में किया जाना चाहिये जिससे विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता में वृद्धि होगी तथा उन्हें अभ्यास द्वारा अनुभव भी प्राप्त होगा।

संवेदनशीलता में वृद्धि करना: विद्यार्थियों को उनके वातावरण के प्रति संवेदनशील बनाया जाना चाहिये तभी वह समस्या को तत्काल अनुभव कर पायेंगें और समाधान हेतु तत्पर होंगें। इस हेतु वस्तुओं के प्रति जागरूकता हेतु प्रशिक्षण, साहित्य का गहन चिन्तन-मनन विद्यार्थियों की संवेदनशीलता वृद्धि में सहायक हो सकता है।

ज्ञान में वृद्धि करना: वस्तुतः सर्जनशीलता पूर्व ज्ञान पर आधारित होती है।यह सूचनाओं और विचारों के लिये आधार बनती है। यद्यपि, विषय की सामग्रियां महत्वपूर्ण है फिर भी उनके सोचने के आधार पर समाधान तथा सूचनाओं के प्रयोग द्वारा ही ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है।

कल्पनातिरेक को पुनर्जीवित रखना एवं कल्पना को अनुशासित करना: कल्पनातिरेक मात्र बालकों के मानसिक विकास एवं समायोजन के लिये ही आवश्यक नही है बल्कि यह सर्जनशीलता में एक प्रमुख तत्व भी है अतः माता पिता एवं शिक्षकों को स्वतन्त्र चिन्तन पर आधरित कल्पनाशीलता को प्रेरित करने का प्रयास करना चाहिये। परन्तु, उन्हें यह भी स्पष्ट कर देना चाहिए कि उनकी सभी कल्पनाओं को स्वीकार नही किया जायेगा। जो मानव जाति के लिये लाभप्रद होगी उन्ही को महत्व प्रदान किया जायेगा।

निष्कर्ष

इस प्रकार व्यक्ति की सफलता एवं प्रगति उसकी रचनात्मकता एवं मौलिकता में ही निहित है। इसी कारण अब समस्या के सर्जनात्मक समाधान पर विशेष बल दिया जाता हैं। सर्जनात्मक समस्या समाधान की योग्यता व्यक्ति की अभिवृत्ति में परिवर्तन लाती है, समस्या के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करती है और उसे समस्या अन्वेषक बनाती है। सर्जनात्मक समस्या समाधान विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान कर व्यक्ति में मौलिक समाधान योग्यता विकसित करती है। अतः विद्यार्थियों के सर्जनात्मक विचारों को प्रेरित करने के लिए उन्हें स्वतन्त्र रुप से चिन्तन करने का व स्वतन्त्र चिन्तन पर आधारित कल्पनाशीलता को प्रेरित करने का प्रयास करना चाहिये। शिक्षकों द्वारा समस्या समाधान, प्रोजेक्ट विधि एवं ब्रेनस्टार्मिंग विधियों का प्रयोग कक्षा शिक्षण में किया जाना चाहिये जिससे विद्यार्थियों में सर्जनात्मक समस्या समाधान की योग्यता विकसित हो सकें।

References

1. Draze D. Primarily Problem Solving: Creative Problem Solving Activities. CA: Prufrock Press Inc, 2005. Retrieved from http://books.google.co.in.
2. Isaksen SG. CPS: Linking Creativity and Problem Solving, 1995. Retrieved from http://www.cpsb.com/research/articles/creative-problem-solving/CPS-LinkingCandPS.html
3. Isaksen SG, Treffinger DJ. Celebrating 50 years of reflective practice: Versions of creative problem solving.

Journal of Creative Behavior. 2004; 38(2):75-101. Retrieved from http://cpsb.com/cru/research/articles/Celebrating%2050%20Isak-Tref.pdf
4. Noller RB. Scratching the Surface of Creative Problem Solving: A Bird's Eye View of CPS. Buffalo, NY: DOK, 1979, 4-5.
5. Renn JA. Creative Problem Solving in the Classroom, 2003. Retrieved from http://web.indstate.edu
6. Hota AK. Creativity: Cultural Perspective. New Delhi: Discovery Publishing House, 2000.
7. Isaksen SG, Dorval KB, Treffinger DJ. Creative Approaches to Problem Solving: A Framework for Innovation and Change (3rd ed.). USA: SAGE, 2010. Retrieved from http://books.google.co.in.
8. Proctor T. Creative Problem Solving for Managers: Developing Skills for Decision Making and Innovation (2nd ed.). Oxon: Routledge, 2005. Retrieved from http://books.google.co.in.
9. Rather AR. Creativity: Its Recognition and Development. ND: Sarup & Sons, 2001.
10. Van Gundy AB. Creative Problem Solving: A Guide for Trainers and Management. New York: Quorum Books, 1987. Retrieved from http://books.google.co.in.